IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तक्षशिला : प्राचीन भारतीय ज्ञान-परम्परा, शिक्षा, संस्कृति, नगर-नियोजन एवं पुरातात्त्विक विरासत का समग्र ऐतिहासिक अध्ययन

Taxila: A Comprehensive Historical Study of Ancient Indian Knowledge Tradition, Education, Culture, Urban Planning, and Archaeological Heritage

Dr. Priyanka Sahu
Assistant Professor, History
Government Mahakoshal Arts and Commerce College, Jabalpur (M.P.)

सारांश

तक्षशिला भारतीय सभ्यता के इतिहास में एक ऐसे बहुआयामी नगर के रूप में प्रतिष्ठित है, जिसने शिक्षा, संस्कृति, धर्म, व्यापार, नगर-नियोजन तथा अंतर-सांस्कृतिक संपर्क के क्षेत्रों में दीर्घकाल तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी ऐतिहासिक पहचान केवल एक प्राचीन राजनीतिक केन्द्र के रूप में सीमित नहीं रही, बल्कि यह भारतीय ज्ञान-परम्परा के ऐसे सशक्त केन्द्र के रूप में विकसित हुआ, जहाँ विविध प्रदेशों से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से आते थे। भारतीय साहित्यिक परम्पराओं में तक्षशिला का उल्लेख अत्यन्त प्राचीन काल से प्राप्त होता है, जबकि पुरातात्त्विक उत्खननों ने इसके दीर्घकालीन नगरीय विकास, स्थापत्य-कौशल तथा सांस्कृतिक निरन्तरता के ठोस भौतिक प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन साहित्य में प्राप्त संदर्भ इसकी प्राचीन प्रतिष्ठा, बौद्धिक महत्ता तथा व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव को प्रमाणित करते हैं।

पुरातात्त्विक दृष्टि से तक्षशिला का महत्त्व विशेष रूप से भीर टीला, सिरकप तथा सिरसुख जैसे तीन प्रमुख नगरीय केन्द्रों के कारण अत्यधिक बढ़ जाता है। ये तीनों स्थल नगर के क्रमिक विकास, राजनीतिक परिवर्तनों, स्थापत्य-परम्पराओं तथा नगर-योजना के विकासक्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन उत्खननों से प्राप्त प्राचीरों, आवासीय भवनों, सड़कों, जल-निकास व्यवस्था, धार्मिक संरचनाओं, सिक्कों, आभूषणों, मृद्भाण्डों तथा अन्य पुरावशेषों के आधार पर तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का सम्यक् पुनर्निर्माण सम्भव हुआ है। इन

साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि तक्षशिला केवल राजनीतिक सत्ता का केन्द्र नहीं था, बल्कि विकसित नगरीय संस्कृति, उच्च कोटि की शिल्प-परम्परा तथा बहुलतावादी सांस्कृतिक चेतना का भी प्रतिनिधि था।

प्रस्तुत शोध-पत्र में उपलब्ध साहित्यिक परम्पराओं तथा पुरातात्त्विक साक्ष्यों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर तक्षशिला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शिक्षा-व्यवस्था, नगर-नियोजन, स्थापत्य, धार्मिक जीवन तथा सांस्कृतिक स्वरूप का समन्वित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यह अध्ययन इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि तक्षशिला भारतीय ज्ञान-परम्परा, नगरीकरण तथा सांस्कृतिक समन्वय की एक ऐसी ऐतिहासिक प्रयोगभूमि थी, जिसने प्राचीन भारतीय सभ्यता के विकास में स्थायी एवं दूरगामी योगदान दिया।

Abstract

Taxila occupies a distinguished place in the history of Indian civilization as a multifaceted urban centre that played a significant role in the fields of education, culture, religion, trade, urban planning, and intercultural interaction over a long period. Its historical identity was not confined merely to that of an ancient political centre; rather, it emerged as one of the foremost centres of learning in the Indian knowledge tradition, attracting students from different regions in pursuit of higher education. References to Taxila are found in ancient Indian literary traditions, while archaeological excavations have provided substantial material evidence of its long-standing urban development, architectural excellence, and cultural continuity. Mentions in the *Ramayana*, *Mahabharata*, Buddhist, and Jain literature testify to its antiquity, intellectual prominence, and far-reaching cultural influence.

From an archaeological perspective, the significance of Taxila is greatly enhanced by its three principal urban settlements—**Bhir Mound, Sirkap, and Sirsukh**. These sites collectively represent successive phases of urban development, political transformation, architectural evolution, and planned city construction. Excavations have yielded fortification walls, residential structures, streets, drainage systems, religious monuments, coins, ornaments, pottery, and numerous other antiquities, enabling a comprehensive reconstruction of the social, economic, and cultural life of the period. These findings demonstrate that Taxila was not merely a political capital but also a flourishing urban centre characterized by advanced craftsmanship, sophisticated town planning, and a culturally pluralistic society.

The present research paper offers an integrated analysis of the historical background, educational system, urban planning, architecture, religious life, and cultural landscape of Taxila through a comparative study of literary traditions and archaeological evidence. It further highlights that Taxila served as a remarkable centre of the Indian knowledge tradition, urbanization, and cultural synthesis, making an enduring and far-reaching contribution to the development of ancient Indian civilization.

प्रमुख शब्दः

तक्षशिला, प्राचीन भारतीय शिक्षा, भारतीय ज्ञान-परम्परा, पुरातत्त्व, नगर-नियोजन, भीर टीला, सिरकप, सिरसुख, जंडियाल मंदिर, सांस्कृतिक समन्वय।

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता के इतिहास में कुछ नगर ऐसे हैं, जिन्होंने केवल राजनीतिक सत्ता के केन्द्र के रूप में ही नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, धर्म, वाणिज्य तथा सभ्यतागत आदान-प्रदान के सशक्त माध्यम के रूप में भी अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की। तक्षशिला ऐसे ही महान नगरों में अग्रगण्य है। उत्तर-पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित होने के कारण यह प्राचीन काल से ही विभिन्न राजनीतिक शक्तियों, व्यापारिक मार्गों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के मध्य एक महत्त्वपूर्ण सेतु के रूप में विकसित हुआ। इसकी भौगोलिक स्थिति ने इसे भारतीय भूभाग तथा मध्य एशिया के मध्य संपर्क-सूत्र बनाया, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ विविध सांस्कृतिक प्रभावों का समन्वित विकास हुआ। यही कारण है कि तक्षशिला का इतिहास केवल किसी एक राज्य अथवा राजवंश का इतिहास न होकर भारतीय सभ्यता की बहुलतावादी, समन्वयकारी एवं गतिशील सांस्कृतिक चेतना का इतिहास भी है।

तक्षशिला की ऐतिहासिक विशिष्टता का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार यह है कि इसके अध्ययन के लिए साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक–दोनों प्रकार के प्रामाणिक स्रोत उपलब्ध हैं। एक ओर रामायण, महाभारत, बौद्ध जातक, महावग्ग, धम्मपद-अट्ठकथा तथा जैन साहित्य इसकी प्राचीनता, सांस्कृतिक प्रतिष्ठा और शैक्षणिक गौरव का परिचय देते हैं, तो दूसरी ओर भीर टीला, सिरकप और सिरसुख में सम्पन्न उत्खननों से प्राप्त पुरातात्त्विक अवशेष इसके वास्तविक नगरीय स्वरूप, स्थापत्य-कौशल तथा सामाजिक-आर्थिक जीवन को मूर्त रूप में उद्घाटित करते हैं। साहित्यिक परम्पराओं और पुरातात्त्विक साक्ष्यों का यह समन्वय तक्षशिला के इतिहास को अन्य अनेक प्राचीन नगरों की अपेक्षा अधिक प्रमाणिक एवं बहुआयामी बनाता है।

तक्षशिला की सर्वाधिक स्थायी पहचान उसके शिक्षा-केन्द्र के रूप में विकसित स्वरूप से निर्मित हुई। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल धार्मिक अथवा दार्शनिक ज्ञान का अर्जन नहीं था, बल्कि प्रशासन, चिकित्सा, आयुर्वेद, व्याकरण, धनुर्वेद, अर्थशास्त्र, गणित, ज्योतिष, वाणिज्य, संगीत तथा अन्य अनेक लौकिक एवं व्यावहारिक विषयों का व्यवस्थित अध्ययन भी शिक्षा का अभिन्न अंग था। विभिन्न जनपदों एवं राजपरिवारों से विद्यार्थियों का यहाँ अध्ययन हेतु आगमन इस तथ्य का द्योतक है कि तक्षशिला तत्कालीन भारतीय उपमहाद्वीप का एक व्यापक बौद्धिक केन्द्र था। यहाँ की शिक्षा-व्यवस्था किसी एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में संगठित न होकर स्वतंत्र आचार्य-परम्पराओं एवं गुरुकुलों पर आधारित थी, जिसने ज्ञानार्जन को अधिक व्यावहारिक, बहुविषयी एवं जीवनोपयोगी स्वरूप प्रदान किया।

पुरातात्त्विक दृष्टि से भी तक्षशिला का अध्ययन भारतीय नगरीकरण के विकासक्रम को समझने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भीर टीला से लेकर सिरकप और सिरसुख तक नगर-योजना, स्थापत्य, प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था तथा आवासीय संरचनाओं में जो क्रमिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं, वे प्राचीन भारतीय नगर-नियोजन की विकसित होती परम्परा को स्पष्ट करते हैं। साथ ही यहाँ प्राप्त विविध पुरावशेष तत्कालीन आर्थिक गतिविधियों, शिल्प-कौशल, व्यापारिक सम्पर्कों तथा सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं। इस प्रकार तक्षशिला भारतीय इतिहास में ज्ञान, संस्कृति, पुरातत्त्व और नगरीय विकास के समन्वित अध्ययन का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य तक्षशिला के बहुआयामी ऐतिहासिक स्वरूप का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। तक्षशिला भारतीय इतिहास का ऐसा नगर है, जिसके अध्ययन में साहित्यिक परम्पराएँ और पुरातात्त्विक साक्ष्य समान रूप से महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं। इसी कारण इस अध्ययन में उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों का तुलनात्मक एवं समन्वित विश्लेषण करते हुए तक्षशिला के राजनीतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा नगरीय विकास को समग्र परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया गया है।तक्षशिला की प्राचीनता एवं उसकी साहित्यिक परम्पराओं का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करना है कि भारतीय सांस्कृतिक स्मृति में इस नगर का स्थान किस प्रकार निर्मित हुआ। रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन साहित्य में प्राप्त उल्लेखों के आधार पर तक्षशिला की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक निरन्तरता तथा ज्ञान-परम्परा के विकास का विवेचन इस अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इसके साथ ही विभिन्न साहित्यिक परम्पराओं में निहित संदर्भों की सहायता से तक्षशिला की बहुलतावादी सांस्कृतिक पहचान को समझने का प्रयास किया गया है।अध्ययन का एक अन्य प्रमुख उद्देश्य तक्षशिला को प्राचीन भारत के महान शिक्षा-केन्द्र के रूप में समझना है। इस संदर्भ में शिक्षा की संरचना, अध्ययन-विषयों की विविधता, गुरुकुल-आधारित शिक्षण व्यवस्था, आचार्य-परम्परा तथा विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों की उपस्थिति का विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि तक्षशिला की ख्याति केवल धार्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह बहुविषयी एवं व्यावहारिक ज्ञान के एक समृद्ध केन्द्र के रूप में विकसित हुई थी।

प्रस्तुत अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य तक्षशिला के पुरातात्त्विक उत्खननों से प्राप्त साक्ष्यों का ऐतिहासिक मूल्यांकन करना भी है। भीर टीला, सिरकप तथा सिरसुख के रूप में विकसित तीन प्रमुख नगरीय केन्द्रों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनके कालक्रम, नगर-योजना, स्थापत्य-विकास, प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था, आवासीय संरचनाओं तथा जल-निकास प्रणाली का विश्लेषण किया गया है। इन पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर प्राचीन भारतीय नगरीकरण की विकास-प्रक्रिया तथा सामाजिक-आर्थिक जीवन के स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है।इसके अतिरिक्त इस शोध का उद्देश्य तक्षशिला की धार्मिक एवं सांस्कृतिक बहुलता, कला एवं स्थापत्य, भौतिक संस्कृति तथा अंतर-सांस्कृतिक संपर्कों का मूल्यांकन करना भी है। विभिन्न धार्मिक परम्पराओं, स्थापत्य अवशेषों, सिक्कों, आभूषणों, मृद्भाण्डों तथा अन्य पुरावशेषों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि तक्षशिला भारतीय तथा उत्तर-पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभावों के समन्वय का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। साथ ही यह अध्ययन तक्षशिला के ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक महत्त्व को भारतीय सभ्यता के व्यापक विकासक्रम के संदर्भ में स्थापित करने का प्रयास करता है।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र ऐतिहासिक अनुसंधान की वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों, ऐतिहासिक विवरणों तथा पुरातात्त्विक साक्ष्यों का समन्वित उपयोग किया गया है, जिससे तक्षशिला के बहुआयामी स्वरूप का यथासंभव वस्तुनिष्ठ एवं प्रमाणाधारित विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सके। अध्ययन का उद्देश्य केवल घटनाओं का कालक्रम प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उनके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक निहितार्थों का विवेचन करना है।इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। साहित्यिक स्रोतों के अंतर्गत रामायण, महाभारत, बौद्ध जातक, महावग्ग, धम्मपद-अट्ठकथा तथा जैन साहित्य में उपलब्ध तक्षशिला संबंधी उल्लेखों का विश्लेषण किया गया है। इन स्रोतों के आधार पर तक्षशिला की ऐतिहासिक परम्परा, शिक्षा-व्यवस्था तथा सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का अध्ययन किया गया है। दूसरी ओर, भीर टीला, सिरकप, सिरसुख तथा जंडियाल मंदिर से प्राप्त पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर नगर-योजना, स्थापत्य, भौतिक संस्कृति तथा नगरीय विकास की क्रमिक अवस्थाओं का परीक्षण किया गया है।

अनुसंधान की प्रक्रिया में साहित्यिक परम्पराओं तथा पुरातात्त्विक निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, ताकि उपलब्ध साक्ष्यों की पारस्परिक पुष्टि के आधार पर अधिक संतुलित निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें। अध्ययन को केवल राजनीतिक इतिहास तक सीमित न रखते हुए शिक्षा, समाज, स्थापत्य, धर्म, नगर-नियोजन, आर्थिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं के संदर्भ में समग्र रूप से विश्लेषित किया गया है। इस प्रकार तक्षशिला के इतिहास को बहुआयामी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।प्रस्तुत शोध में तथ्यों का चयन, उनका वर्गीकरण तथा विश्लेषण उपलब्ध स्रोत-सामग्री के आलोचनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध-पत्र में प्रयुक्त सभी निष्कर्ष साहित्यिक परम्पराओं एवं पुरातात्त्विक प्रमाणों के समन्वित परीक्षण से प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार अध्ययन की सम्पूर्ण प्रक्रिया ऐतिहासिक अनुसंधान की वैज्ञानिकता, वस्तुनिष्ठता तथा स्रोत-समालोचना के सिद्धान्तों पर आधारित है, जिससे तक्षशिला के ऐतिहासिक स्वरूप का प्रमाणिक एवं संतुलित निरूपण प्रस्तुत किया जा सके।

तक्षशिला की प्राचीनता एवं साहित्यिक परम्परा

तक्षशिला की ऐतिहासिक प्राचीनता का आधार केवल पुरातात्त्विक अवशेषों तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय साहित्यिक परम्पराओं में सुरक्षित उसकी सुदीर्घ सांस्कृतिक स्मृति भी उसके प्राचीन स्वरूप को प्रमाणित करती है। भारतीय वाङ्मय के विविध स्रोतों में तक्षशिला का उल्लेख इस तथ्य का द्योतक है कि यह नगर अत्यन्त प्राचीन काल से ही ज्ञान, संस्कृति तथा राजनीतिक महत्त्व का केन्द्र रहा था। इसकी विशेषता यह है कि इसका उल्लेख किसी एक धार्मिक अथवा सांस्कृतिक परम्परा तक सीमित नहीं है, बल्कि वैदिक, पौराणिक, बौद्ध तथा जैन–सभी प्रमुख परम्पराओं में समान रूप से प्राप्त होता है। यही बहुआयामी उपस्थिति तक्षशिला को भारतीय सभ्यता की समन्वयवादी परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक बनाती है।रामायण की परम्परा के अनुसार तक्षशिला की स्थापना भरत के पुत्र **तक्ष** द्वारा की गई थी। इस उल्लेख के माध्यम से नगर की उत्पत्ति को भारतीय पौराणिक-

ऐतिहासिक परम्परा से जोड़ा गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि तक्षशिला केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं थी, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग थी। इसी प्रकार महाभारत में भी तक्षशिला का उल्लेख उसकी राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को रेखांकित करता है। यद्यपि इन ग्रन्थों का उद्देश्य आधुनिक अर्थों में इतिहास-लेखन नहीं था, तथापि इनमें निहित परम्पराएँ तक्षशिला की प्राचीन प्रतिष्ठा और उसके व्यापक प्रभाव का महत्त्वपूर्ण संकेत प्रदान करती हैं।

बौद्ध साहित्य में तक्षशिला का उल्लेख विशेष रूप से उसकी शैक्षणिक गरिमा के संदर्भ में प्राप्त होता है। जातक कथाओं, महावग्ग तथा धम्मपद-अट्ठकथा में तक्षशिला को ऐसे प्रतिष्ठित शिक्षा-केन्द्र के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ विभिन्न प्रदेशों से विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए आते थे। इन ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि तक्षशिला की ख्याति केवल किसी विशिष्ट वर्ग अथवा समुदाय तक सीमित नहीं थी, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में उसका बौद्धिक प्रभाव स्थापित था। बौद्ध परम्परा में तक्षशिला का चित्रण यह भी स्पष्ट करता है कि यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल धार्मिक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि विविध विद्याओं में दक्षता प्राप्त करना था।

जैन साहित्य में भी तक्षशिला का उल्लेख उसकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का प्रमाण प्रस्तुत करता है। उपलब्ध परम्पराओं में ऋषभदेव से सम्बन्धित उल्लेख इस नगर की धार्मिक स्मृति की व्यापकता को अभिव्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त श्रीलंकाई ऐतिहासिक परम्पराओं में भी तक्षशिला से सम्बन्धित संदर्भ प्राप्त होते हैं, जो इस नगर के अंतर-क्षेत्रीय सांस्कृतिक सम्पर्कों का संकेत देते हैं। इन सभी साहित्यिक स्रोतों का समन्वित अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि तक्षशिला किसी एक धार्मिक समुदाय अथवा राजनीतिक सत्ता का केन्द्र मात्र नहीं थी, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्परा और सांस्कृतिक निरन्तरता की एक साझा धरोहर थी।इन साहित्यिक प्रमाणों का वास्तविक महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि वे तक्षशिला के इतिहास को केवल पुरातात्त्विक साक्ष्यों तक सीमित नहीं रहने देते। वे यह सिद्ध करते हैं कि यह नगर भारतीय सांस्कृतिक स्मृति में एक आदर्श शिक्षण-केन्द्र, प्रतिष्ठित नगर तथा बहुआयामी सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में दीर्घकाल तक विद्यमान रहा। फलतः तक्षशिला की प्राचीनता का अध्ययन साहित्यिक परम्पराओं और पुरातात्त्विक प्रमाणों के संयुक्त विश्लेषण के बिना पूर्ण नहीं माना जा सकता।

ऐतिहासिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि

तक्षशिला का ऐतिहासिक विकास उसकी भौगोलिक स्थिति से गहराई से प्रभावित रहा। उत्तर-पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित होने के कारण यह नगर प्राचीन भारत तथा मध्य एशिया के मध्य संपर्क का प्रमुख केन्द्र बन गया। यही कारण था कि विभिन्न राजनीतिक शक्तियों, व्यापारिक मार्गों तथा सांस्कृतिक प्रभावों का सतत् प्रवाह यहाँ बना रहा। इसकी स्थिति ने इसे एक ओर भारतीय आन्तरिक प्रदेशों से जोड़ा, तो दूसरी ओर उत्तर-पश्चिम से आने वाली बाह्य शक्तियों के लिए प्रवेश-द्वार का कार्य भी किया। परिणामस्वरूप तक्षशिला का इतिहास निरन्तर राजनीतिक परिवर्तन तथा सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं से निर्मित होता रहा।उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार ईसा-पूर्व छठी शताब्दी में इस क्षेत्र पर फारसी प्रभाव स्थापित हुआ। इसके पश्चात् सिकन्दर के भारतीय अभियान के समय तक्षशिला का उल्लेख विशेष रूप से प्राप्त होता है। तत्कालीन शासक आम्भि द्वारा सिकन्दर के साथ स्थापित मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित करते हैं। सिकन्दर की मृत्यु के

उपरान्त उत्तर-पश्चिम भारत की राजनीतिक संरचना में परिवर्तन आया और आगे चलकर मौर्य सत्ता का प्रभाव स्थापित हुआ। इस सम्पूर्ण क्रम से स्पष्ट होता है कि तक्षशिला केवल सीमावर्ती नगर नहीं था, बल्कि उत्तर-पश्चिम भारत की राजनीतिक गतिविधियों का एक सक्रिय केन्द्र था।मौर्यकाल में तक्षशिला का प्रशासनिक एवं सामरिक महत्त्व और अधिक सुदृढ़ हुआ। उपलब्ध विवरणों से ज्ञात होता है कि बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक का सम्बन्ध तक्षशिला से रहा तथा समय-समय पर यहाँ उत्पन्न असन्तोष एवं विद्रोहों का भी उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट है कि यह नगर मौर्य साम्राज्य की उत्तर-पश्चिमी प्रशासनिक व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। यद्यपि राजनीतिक परिस्थितियाँ समय के साथ परिवर्तित होती रहीं, तथापि तक्षशिला का सामरिक एवं प्रशासनिक महत्त्व दीर्घकाल तक बना रहा।मौर्य साम्राज्य के पश्चात् उत्तर-पश्चिम भारत की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के साथ तक्षशिला भी विभिन्न शक्तियों के प्रभाव में आया। इंडो-ग्रीक, शक तथा बाद में कुषाण शासकों का प्रभाव इसके पुरातात्त्विक स्तरों एवं भौतिक संस्कृति में परिलक्षित होता है। विशेष रूप से सिरसुख नगर का विकास कुषाणकालीन राजनीतिक परिवर्तनों से सम्बद्ध माना गया है। इस प्रकार तक्षशिला का राजनीतिक इतिहास निरन्तर परिवर्तनशील रहा, किन्तु प्रत्येक राजनीतिक परिवर्तन ने उसके सांस्कृतिक एवं नगरीय स्वरूप को नए आयाम प्रदान किए।

प्राचीन भारत का महान शिक्षा केन्द्र

तक्षशिला की ऐतिहासिक पहचान का सबसे स्थायी और गौरवपूर्ण पक्ष उसका प्राचीन भारत के महान शिक्षा-केन्द्र के रूप में विकसित होना है। भारतीय इतिहास में यह ऐसा नगर था जिसकी ख्याति केवल राजनीतिक शक्ति अथवा आर्थिक समृद्धि के कारण नहीं, बल्कि ज्ञान और विद्या के प्रसार के कारण सम्पूर्ण उपमहाद्वीप में स्थापित हुई। दूर-दूर के प्रदेशों से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से यहाँ आते थे, जिससे तक्षशिला विविध सांस्कृतिक परम्पराओं, भाषाओं तथा बौद्धिक विचारधाराओं का संगम बन गया।उपलब्ध साहित्यिक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि बनारस, राजगृह, मिथिला तथा उज्जयिनी जैसे प्रमुख नगरों से भी विद्यार्थी तक्षशिला में अध्ययन हेतु आते थे। विभिन्न जनपदों तथा राजपरिवारों के विद्यार्थियों की उपस्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि तक्षशिला की प्रतिष्ठा किसी क्षेत्रीय सीमा में आबद्ध नहीं थी। जातक साहित्य में राजकुमारों सहित अनेक विद्यार्थियों के तक्षशिला भेजे जाने के उल्लेख इस शिक्षा-परम्परा की व्यापक स्वीकृति एवं उच्च प्रतिष्ठा को अभिव्यक्त करते हैं।

तक्षशिला की शिक्षा-व्यवस्था की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसका बहुविषयी स्वरूप था। यहाँ शिक्षा केवल वेदों अथवा धार्मिक ग्रन्थों तक सीमित नहीं थी, बल्कि आयुर्वेद, धनुर्वेद, हस्तिविद्या, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, वाणिज्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला तथा अन्य अनेक व्यावहारिक विषयों का भी अध्ययन कराया जाता था। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य केवल आध्यात्मिक उन्नयन नहीं, बल्कि प्रशासनिक दक्षता, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था, युद्धकला तथा सामाजिक जीवन से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान का विकास भी था। यह विशेषता तक्षशिला को प्राचीन भारतीय शिक्षा-परम्परा का सर्वाधिक प्रगतिशील केन्द्र सिद्ध करती है।तक्षशिला की शिक्षण-पद्धति आधुनिक विश्वविद्यालयों से भिन्न थी। यहाँ किसी एक केन्द्रीय संस्था के अधीन सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था संचालित नहीं होती थी, बल्कि अनेक स्वतंत्र आचार्य एवं गुरुकुल अपने-अपने विषयों का अध्यापन करते थे। विद्यार्थी अपनी रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार विभिन्न आचार्यों से शिक्षा प्राप्त करते थे। इस विकेन्द्रित व्यवस्था ने ज्ञान के विविध क्षेत्रों

के विकास को प्रोत्साहित किया तथा प्रत्येक आचार्य को अपने विषय में विशिष्टता विकसित करने का अवसर प्रदान किया। यही कारण है कि तक्षशिला की महानता किसी विशाल संस्थागत ढाँचे में नहीं, बल्कि उसके विद्वान आचार्यों, विविध विषयों तथा जीवंत ज्ञान-परम्परा में निहित थी।

इस प्रकार तक्षशिला प्राचीन भारतीय शिक्षा-व्यवस्था का ऐसा आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती है, जहाँ ज्ञान को जीवनोपयोगी, बहुविषयी तथा समाजोपयोगी दृष्टिकोण से विकसित किया गया। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा के इतिहास में तक्षशिला का स्थान केवल एक प्राचीन शिक्षण-केन्द्र के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुसंधान, बौद्धिक स्वतंत्रता तथा सांस्कृतिक समन्वय के महान केन्द्र के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

बौद्ध परम्परा में तक्षशिला

तक्षशिला की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा का एक महत्त्वपूर्ण आधार बौद्ध साहित्य में उसका व्यापक एवं सम्मानजनक उल्लेख है। बौद्ध परम्परा में यह नगर केवल एक राजनीतिक अथवा आर्थिक केन्द्र के रूप में नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा, बौद्धिक उत्कृष्टता तथा सांस्कृतिक समन्वय के प्रतिष्ठित केन्द्र के रूप में स्मरण किया गया है। जातक साहित्य, महावग्ग तथा धम्मपद-अट्ठकथा में तक्षशिला के अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि बौद्ध युग तक आते-आते इसकी शिक्षा-परम्परा सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में सुविख्यात हो चुकी थी। इन स्रोतों से स्पष्ट होता है कि तक्षशिला में ज्ञानार्जन को सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिक विकास तथा व्यावहारिक दक्षता के साथ जोड़ा जाता था।बौद्ध जातकों में अनेक स्थानों पर राजकुमारों तथा सामान्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तक्षशिला भेजे जाने का उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि यह नगर केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं था, बल्कि विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों के लिए भी ज्ञानार्जन का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। यहाँ की शिक्षा में विविध विषयों का अध्ययन कराया जाता था, जिससे विद्यार्थी प्रशासन, समाज, चिकित्सा तथा अन्य व्यावहारिक क्षेत्रों में दक्ष बनते थे। यह तथ्य तक्षशिला की शिक्षा-व्यवस्था की उदार एवं व्यापक प्रकृति को अभिव्यक्त करता है।

बौद्ध साहित्य से यह भी संकेत मिलता है कि तक्षशिला की ज्ञान-परम्परा किसी एक धार्मिक विचारधारा तक सीमित नहीं थी। यहाँ शिक्षा का वातावरण बहुलतावादी था, जहाँ विभिन्न बौद्धिक परम्पराओं एवं ज्ञान-विधाओं को समान महत्त्व प्राप्त था। यही कारण है कि तक्षशिला ने भारतीय ज्ञान-परम्परा में सहिष्णुता, संवाद तथा बौद्धिक स्वतंत्रता की परम्परा को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। इस प्रकार बौद्ध परम्परा में तक्षशिला का उल्लेख केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि भारतीय शिक्षा एवं सांस्कृतिक इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण अध्याय के रूप में किया गया है।

तक्षशिला की खोज एवं पुरातात्त्विक उत्खनन

तक्षशिला के आधुनिक ऐतिहासिक अध्ययन में पुरातात्त्विक अन्वेषणों की भूमिका अत्यन्त निर्णायक रही है। यद्यपि भारतीय साहित्यिक परम्पराओं में इस नगर की स्मृति प्राचीन काल से सुरक्षित थी, तथापि इसके वास्तविक स्वरूप, नगर-योजना तथा सांस्कृतिक विकास का वैज्ञानिक ज्ञान व्यवस्थित उत्खननों के माध्यम से ही प्राप्त हुआ। आधुनिक पुरातत्त्व ने तक्षशिला के इतिहास को साहित्यिक परम्पराओं की सीमा से बाहर निकालकर ठोस भौतिक प्रमाणों के आधार पर पुनर्स्थापित किया।उपलब्ध विवरणों के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी में जनरल कनिंघम ने तक्षशिला की पहचान एवं उसके प्राचीन अवशेषों के सर्वेक्षण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसके पश्चात् सर जॉन मार्शल के निर्देशन में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से व्यवस्थित उत्खनन प्रारम्भ हुए, जिनके परिणामस्वरूप तक्षशिला के विभिन्न पुरातात्त्विक स्थलों का क्रमिक स्वरूप प्रकाश में आया। आगे चलकर सर मॉर्टिमर व्हीलर द्वारा भी यहाँ सीमित उत्खनन किए गए, जिनसे पूर्व प्राप्त निष्कर्षों की पुष्टि हुई तथा तक्षशिला के नगरीय विकास के संबंध में नई जानकारियाँ प्राप्त हुईं।

इन उत्खननों का सबसे महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह था कि तक्षशिला किसी एक काल का स्थिर नगर नहीं था। विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ इसके नगरीय केन्द्र समय-समय पर स्थानांतरित होते रहे। पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर भीर टीला, सिरकप तथा सिरसुख को तक्षशिला के विकास की तीन प्रमुख अवस्थाओं के रूप में पहचाना गया। इस खोज ने यह स्पष्ट किया कि तक्षशिला का इतिहास एक सतत् विकासशील नगरीय परम्परा का इतिहास है, जिसमें प्रत्येक चरण पूर्ववर्ती अवस्था का विस्तार एवं रूपान्तरण प्रस्तुत करता है।

भौगोलिक स्थिति

तक्षशिला की ऐतिहासिक महत्ता का एक प्रमुख कारण उसकी अनुकूल भौगोलिक स्थिति थी। प्राचीन काल में यह नगर वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी क्षेत्र के उत्तर-पश्चिम में स्थित था तथा सिंधु एवं झेलम नदी प्रणालियों के मध्यवर्ती क्षेत्र से सम्बद्ध था। यह स्थान भारतीय उपमहाद्वीप तथा उत्तर-पश्चिमी एशिया के मध्य संपर्क स्थापित करने वाले प्रमुख मार्गों पर स्थित था, जिसके कारण तक्षशिला व्यापार, संस्कृति तथा राजनीतिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गया।तक्षशिला की घाटी प्राकृतिक भू-आकृतिक संरचनाओं से सुरक्षित थी। इसी क्षेत्र में भीर, सिरकप तथा सिरसुख जैसे तीन प्रमुख प्राचीन नगर क्रमशः विकसित हुए। प्राकृतिक सुरक्षा, उपयुक्त स्थलाकृति तथा संपर्क मार्गों की उपलब्धता ने इसके नगरीय विकास को विशेष गति प्रदान की। यही भौगोलिक विशेषताएँ आगे चलकर इसकी आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक बहुलता तथा राजनीतिक महत्त्व का आधार बनीं।

तक्षशिला का कालक्रम एवं तीन नगरीय अवस्थाएँ

तक्षशिला के इतिहास की सबसे उल्लेखनीय विशेषता उसका क्रमिक नगरीय विकास है। पुरातात्त्विक उत्खननों से यह स्पष्ट हुआ है कि यह नगर एक ही स्थान पर निरन्तर विकसित नहीं हुआ, बल्कि विभिन्न कालों में बदलती राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार इसके नगरीय केन्द्र स्थानांतरित होते रहे। भीर टीला, सिरकप

तथा सिरसुख इस विकास-क्रम की तीन प्रमुख अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन स्थलों से प्राप्त सिक्के, मृद्‌भाण्ड, धातु उपकरण, आभूषण तथा स्थापत्य अवशेष इनके काल-निर्धारण एवं सांस्कृतिक स्वरूप को समझने में अत्यन्त उपयोगी सिद्‌ध हुए हैं।

भीर टीला : तक्षशिला का प्रारम्भिक नगर

भीर टीला तक्षशिला के सबसे प्राचीन नगरीय केन्द्र के रूप में जाना जाता है। उत्खननों से यहाँ अनेक पुरातात्त्विक स्तरों की पहचान हुई है, जो इसके दीर्घकालीन विकास का संकेत देते हैं। विभिन्न स्तरों से प्राप्त लोहे, ताँबे तथा काँसे के उपकरण, मनके, आभूषण, मृद्‌भाण्ड तथा अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यहाँ के विकसित सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का परिचय देती हैं। विशेष रूप से आहत सिक्कों सहित विभिन्न प्रकार की मुद्राओं की प्राप्ति तत्कालीन आर्थिक गतिविधियों तथा कालक्रम के निर्धारण में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्‌ध हुई है।

इन पुरातात्त्विक अवशेषों से यह भी ज्ञात होता है कि तक्षशिला का बाहरी क्षेत्रों के साथ सक्रिय संपर्क था। विदेशी प्रभावयुक्त वस्तुओं की प्राप्ति इस तथ्य की पुष्टि करती है कि यह नगर व्यापारिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से व्यापक अंतर-क्षेत्रीय संबंधों का केन्द्र था। भीर टीला के अवशेष तक्षशिला के प्रारम्भिक नगरीय जीवन, शिल्प-परम्परा तथा आर्थिक संगठन के अध्ययन के लिए आधारभूत महत्त्व रखते हैं।

तक्षशिला का प्रथम नगर एवं उसकी नगर-योजना

तक्षशिला के प्रारम्भिक नगर की योजना अपेक्षाकृत अनियमित थी, किन्तु उसमें विकसित नगरीय जीवन के स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं। भवन स्थानीय पत्थरों से निर्मित थे तथा गलियों का विन्यास संकीर्ण एवं अनियमित था। मुख्य मार्गों के साथ अनेक छोटी गलियाँ विकसित थीं, जिनके दोनों ओर आवासीय भवन स्थित थे। अधिकांश भवनों की योजना आँगन-केंद्रित थी, जिसके चारों ओर विभिन्न कक्ष निर्मित किए जाते थे। कुछ बड़े भवन सम्भवतः व्यापारिक अथवा सार्वजनिक उपयोग में भी लाए जाते थे।

तक्षशिला की प्रारम्भिक नगर-योजना में जल-प्रबंधन की सुविकसित व्यवस्था विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गलियों में ढकी हुई नालियाँ, घरों से निकलने वाले अपशिष्ट जल के निस्तारण के लिए सोख्ता-कूप तथा सार्वजनिक स्थानों पर निर्मित बड़े सोख्ता-गड्ढे तत्कालीन नगर-प्रशासन की व्यावहारिक दक्षता को दर्शाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि स्वच्छता, स्वास्थ्य तथा जल-निकास की समस्याओं के समाधान के प्रति तत्कालीन समाज सजग था।आवासीय भवनों में आँगन, बरामदे तथा अनेक कक्षों की योजना भारतीय गृह-निर्माण परम्परा का प्रतिनिधित्व करती है। कुछ भवनों में व्यापारिक गतिविधियों के संकेत भी प्राप्त होते हैं, जबकि निर्माण में स्थानीय संसाधनों–विशेषतः पत्थर, लकड़ी एवं मिट्टी–का उपयोग किया गया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि तक्षशिला का स्थापत्य स्थानीय पर्यावरण, उपलब्ध संसाधनों तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुआ था।

सिरकप : तक्षशिला का द्वितीय नगर

तक्षशिला के नगरीय विकास के इतिहास में सिरकप एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करता है। पुरातात्त्विक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि प्राचीन नगर के स्थान पर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के प्रारम्भिक चरण में एक नवीन एवं अधिक सुव्यवस्थित नगर का विकास हुआ। यह परिवर्तन केवल भौगोलिक स्थानांतरण नहीं था, बल्कि नगर-योजना, स्थापत्य-कला तथा प्रशासनिक संगठन के विकास का भी परिचायक था। सिरकप की सबसे बड़ी विशेषता उसकी योजनाबद्ध संरचना थी, जिसने तक्षशिला के नगरीय विकास को एक नए स्तर पर पहुँचाया।सिरकप की नगर-योजना में सुव्यवस्थित सड़कों, प्राचीरों, आवासीय खण्डों तथा व्यापारिक क्षेत्रों का समन्वित विकास दिखाई देता है। सड़कें एक-दूसरे को लगभग समकोण पर काटती थीं, जिससे पूरा नगर सुव्यवस्थित खण्डों में विभाजित हो जाता था। इस प्रकार की योजना तत्कालीन विकसित नगर-नियोजन की परिचायक है। नगर के चारों ओर निर्मित प्राचीर तथा प्रवेश-द्वार उसकी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाते थे, जबकि मुख्य मार्गों के दोनों ओर स्थित भवन एवं दुकानें व्यापारिक गतिविधियों की सक्रियता का संकेत देती हैं।

सिरकप के भवनों का निर्माण मुख्यतः पत्थरों से किया गया था। उत्खननों से ज्ञात होता है कि यहाँ की निर्माण-प्रणाली भीर टीले की अपेक्षा अधिक विकसित एवं व्यवस्थित थी। भवनों, सड़कों तथा अन्य स्थापत्य अवशेषों में विदेशी प्रभावों के साथ भारतीय निर्माण-परम्पराओं का भी समन्वय दिखाई देता है। पुरातात्त्विक स्तरों में प्राप्त सिक्के एवं अन्य पुरावशेष यह प्रमाणित करते हैं कि सिरकप विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं तथा व्यापारिक सम्पर्कों का सक्रिय केन्द्र था। समय-समय पर प्राकृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के कारण भवनों का पुनर्निर्माण भी किया गया, जिससे इसकी स्थापत्य परम्परा निरन्तर विकसित होती रही।

सिरसुख : तक्षशिला का अंतिम प्रमुख नगर

तक्षशिला के नगरीय विकास की अंतिम प्रमुख अवस्था सिरसुख के रूप में सामने आती है। उपलब्ध पुरातात्त्विक साक्ष्यों के अनुसार कुषाणकाल में नगर का केन्द्र पुनः परिवर्तित हुआ तथा सिरकप के उत्तर-पश्चिम में सिरसुख की स्थापना की गई। यह परिवर्तन तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों तथा नगरीय आवश्यकताओं के अनुरूप था। सिरसुख का निर्माण अधिक सुरक्षित एवं सुदृढ़ प्रतिरक्षात्मक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किया गया था।

सिरसुख के चारों ओर निर्मित विशाल प्राचीरें, निश्चित अन्तराल पर स्थित बुर्ज तथा पत्थरों से निर्मित सुदृढ़ सुरक्षा-व्यवस्था इसकी विकसित प्रतिरक्षात्मक योजना का परिचय देती हैं। उत्खननों से प्राप्त विशाल भवनों, आँगनयुक्त संरचनाओं तथा चूने और पत्थर से निर्मित दीवारों से यह स्पष्ट होता है कि इस काल तक तक्षशिला की स्थापत्य तकनीक पर्याप्त विकसित हो चुकी थी। सिरसुख तक्षशिला की दीर्घकालीन नगरीय परम्परा की परिपक्व एवं विकसित अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक बहुलता

तक्षशिला का इतिहास केवल शिक्षा अथवा राजनीति तक सीमित नहीं है; यह धार्मिक सह-अस्तित्व एवं सांस्कृतिक समन्वय का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। उपलब्ध साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि यहाँ वैदिक, बौद्ध तथा अन्य धार्मिक परम्पराओं का विकास समानांतर रूप से हुआ। यही बहुलतावादी वातावरण तक्षशिला की सांस्कृतिक चेतना की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। यहाँ धर्म किसी एक विचारधारा तक सीमित न रहकर विविध आस्थाओं एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के मध्य संवाद का माध्यम बना।

बौद्ध विहारों, स्तूपों तथा अन्य धार्मिक स्थापत्य अवशेषों के साथ-साथ विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं के स्मारकों की उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि तक्षशिला बहुधार्मिक एवं बहुसांस्कृतिक समाज का प्रतिनिधित्व करता था। यही कारण है कि इसका सांस्कृतिक स्वरूप भारतीय सभ्यता की उदार, समन्वयकारी तथा बहुलतावादी परम्परा का सशक्त उदाहरण माना जाता है।

जंडियाल मंदिर

तक्षशिला के धार्मिक स्थापत्य में जंडियाल मंदिर का विशिष्ट स्थान है। उपलब्ध पुरातात्त्विक विवरणों के अनुसार इसका स्थापत्य भारतीय मंदिर-परम्परा से कुछ भिन्न विशेषताएँ प्रस्तुत करता है तथा इसमें उत्तर-पश्चिमी स्थापत्य प्रभावों की झलक दिखाई देती है। मंदिर की योजना, मंडप, गर्भगृह, परिधीय दीवारें तथा आयोनियन शैली के स्तम्भ इस स्थापत्य को विशिष्ट बनाते हैं।

जंडियाल मंदिर इस तथ्य का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है कि तक्षशिला में विभिन्न सांस्कृतिक एवं स्थापत्य परम्पराओं का परस्पर समन्वय हुआ। यह स्मारक केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सम्पर्कों, स्थापत्य-विकास तथा कलात्मक आदान-प्रदान के अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

तक्षशिला : सांस्कृतिक समन्वय का केन्द्र

तक्षशिला की सबसे बड़ी ऐतिहासिक विशेषता उसकी सांस्कृतिक समन्वयकारी प्रकृति थी। भारतीय उपमहाद्वीप तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों के मध्य स्थित होने के कारण यह नगर विविध राजनीतिक शक्तियों, व्यापारिक मार्गों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के सतत् सम्पर्क में रहा। परिणामस्वरूप यहाँ भारतीय एवं बाह्य सांस्कृतिक तत्वों का स्वाभाविक समन्वय विकसित हुआ।

नगर-योजना, स्थापत्य, सिक्कों, शिल्प, व्यापारिक गतिविधियों तथा कलात्मक परम्पराओं में यह समन्वय स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। भीर की प्रारम्भिक अनियमित योजना से लेकर सिरकप की योजनाबद्ध संरचना तथा सिरसुख की विकसित प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था तक का विकास इस सांस्कृतिक एवं तकनीकी परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार तक्षशिला का पुरातत्त्व विभिन्न सभ्यताओं के रचनात्मक संवाद का ऐतिहासिक साक्ष्य है।

तक्षशिला की भौतिक संस्कृति

तक्षशिला से प्राप्त सिक्के, आभूषण, मृद्भाण्ड, धातु उपकरण, मनके, मुहरें तथा दैनिक उपयोग की विविध वस्तुएँ तत्कालीन समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को समझने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इन पुरावशेषों से विकसित शिल्प-कौशल, व्यापारिक सम्पर्क, आर्थिक विनिमय तथा सामाजिक जीवन के अनेक पक्षों का ज्ञान प्राप्त होता है।

भवनों, सड़कों, दुकानों तथा आवासीय संरचनाओं के अवशेष यह स्पष्ट करते हैं कि तक्षशिला का आर्थिक जीवन अत्यन्त सक्रिय था। यहाँ प्राप्त भौतिक संस्कृति यह सिद्ध करती है कि नगर का विकास केवल राजनीतिक संरक्षण का परिणाम नहीं था, बल्कि शिल्प, व्यापार तथा सामाजिक संगठन की सुदृढ़ परम्परा पर आधारित था।

तक्षशिला के पतन की प्रक्रिया

तक्षशिला का पतन किसी एक घटना का परिणाम नहीं था, बल्कि यह दीर्घकालीन राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों की क्रमिक प्रक्रिया का निष्कर्ष था। बदलती राजनीतिक परिस्थितियों, बाह्य आक्रमणों तथा प्रशासनिक अस्थिरता ने इसकी शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को धीरे-धीरे प्रभावित किया। परिणामस्वरूप जो नगर दीर्घकाल तक भारतीय ज्ञान-परम्परा का प्रमुख केन्द्र रहा, उसकी पूर्ववर्ती गौरवशाली स्थिति क्रमशः क्षीण होती गई।

तक्षशिला का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक महत्त्व

तक्षशिला का महत्त्व भारतीय इतिहास के अनेक आयामों में स्थापित होता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह बहुविषयी, आचार्य-प्रधान एवं विकेन्द्रित ज्ञान-परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है; राजनीतिक इतिहास में यह उत्तर-पश्चिम भारत की बदलती सत्ता-संरचनाओं का साक्षी है; जबकि पुरातत्त्व के क्षेत्र में भीर, सिरकप तथा सिरसुख जैसे तीन नगर प्राचीन भारतीय नगरीकरण के विकास का क्रमिक एवं प्रमाणिक चित्र प्रस्तुत करते हैं।तक्षशिला का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता का विकास निरन्तर सांस्कृतिक सम्पर्कों, तकनीकी नवाचारों तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं से हुआ। इस दृष्टि से तक्षशिला भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व, शिक्षा एवं सांस्कृतिक अध्ययन के लिए एक अनिवार्य ऐतिहासिक केन्द्र है।

निष्कर्ष

तक्षशिला भारतीय सभ्यता का ऐसा अद्वितीय केन्द्र था, जहाँ शिक्षा, नगरीकरण, राजनीति, संस्कृति तथा धर्म का समन्वित विकास हुआ। इसकी ऐतिहासिक महत्ता केवल एक प्राचीन शिक्षा-केन्द्र के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्परा, विकसित नगरीय संस्कृति तथा बहुलतावादी सामाजिक जीवन के प्रतिनिधि नगर के रूप में स्थापित

होती है। साहित्यिक स्रोत इसकी प्राचीन प्रतिष्ठा को प्रमाणित करते हैं, जबकि पुरातात्त्विक उत्खनन उसके वास्तविक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का प्रमाणिक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

तक्षशिला की शिक्षा-व्यवस्था, नगर-योजना, स्थापत्य-कला, धार्मिक सह-अस्तित्व तथा सांस्कृतिक समन्वय यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत में ज्ञान और सभ्यता का विकास बहुआयामी एवं समावेशी आधारों पर हुआ था। भीर, सिरकप तथा सिरसुख के क्रमिक विकास से प्राचीन भारतीय नगरीकरण की परिवर्तनशील प्रक्रिया स्पष्ट होती है, जबकि जंडियाल मंदिर, विविध पुरावशेष तथा नगर-योजना सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं के सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार तक्षशिला भारतीय इतिहास का केवल एक नगर नहीं, बल्कि शिक्षा, संस्कृति, पुरातत्त्व एवं सभ्यतागत विकास का जीवंत प्रतीक है, जिसका अध्ययन आज भी प्राचीन भारतीय इतिहास की समग्र समझ के लिए अपरिहार्य है।

संदर्भ ग्रंथ

1. **अल्तेकर, अनन्त सदाशिव.** *Education in Ancient India*. **वाराणसी: नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स.**
2. Marshall, John. *Taxila: An Illustrated Account of Archaeological Excavations*. Vols. I–III. Cambridge: Cambridge University Press.
3. Cunningham, Alexander. *Archaeological Survey of India Reports*. New Delhi: Archaeological Survey of India.
4. Wheeler, R. E. M. *Archaeology from the Earth*. London: Oxford University Press.
5. **वाल्मीकि.** ***श्रीमद्वाल्मीकि रामायण*** **(उत्तरकाण्ड). गोरखपुर: गीता प्रेस.**
6. **वेदव्यास.** ***महाभारत.*** **गोरखपुर: गीता प्रेस.**
7. ***जातक*** **(पाली पाठ), सम्पा. वी. फॉसबोल (V. Fausbøll). लंदन: Pali Text Society.**
8. ***महावग्ग*** **(विनय पिटक). Pali Text Society Edition.**
9. ***धम्मपद-अट्ठकथा.*** Pali Text Society Edition.
10. Raychaudhuri, H. C. *Political History of Ancient India*. New Delhi: Oxford University Press.
11. Majumdar, R. C. (Ed.). *The History and Culture of the Indian People*, Vol. II. Mumbai: Bharatiya Vidya Bhavan.
12. Ghosh, A. (Ed.). *An Encyclopaedia of Indian Archaeology*. New Delhi: Munshiram Manoharlal.
13. **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India).** *Annual Reports on Indian Archaeology*.
14. Sircar, D. C. *Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization*. Vol. I. Delhi: Motilal Banarsidass.
15. **रोमिला थापर.** ***प्राचीन भारत का इतिहास.*** **नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.**